बिलावल थाट

संगीत मंथन के पाठकों को सुधा पटवर्धन की ओर से नमस्ते|

अब हम बिलावल थाट के कुछ प्रमुख रात्रिगेय रागों का विचार करेंगे| वे राग हैं--दुर्गा, बिहाग एवं शंकरा |

१ दुर्गा--सब स्वर शुद्ध होने से कुछ रागों को पं. भातखंडे जी ने बिलावल थाट में रखा है; इनमे उपरोक्त तीनो राग आते हैं| दुर्गा राग में गंधार और निषाद स्वर वर्जित हैं,अत:राग की जाति औडव है| वादी और सम्वादी के विषय में तीन मत हैं--कुछ विद्वान रे-ध को, कुछ ध-रे को और कुछ म्-सा को वादी-संवादी मानते हैं| पंचम - षड्ज को वादी-संवादी मानने वाला भी एक गुट है| वैसे राग में धैवत पर विश्राम होने से उसे वादी मानना समीचीन प्रतीत होता है, किन्तु इस राग को पूर्वांग वादी माननेवालों का कहना है कि रिषभ को वादी मानना उचित, किन्तु दुर्गा को उत्तरांगवादी मानने की प्रथा पहले से चली आई है| अत: उस मत को माननेवालों का कहना है कि धैवत को वादी मानना ठीक है| किन्तु म् और प को वादी मानने वालों का पक्ष उतना प्रबल नहीं है| वैसे आरोह में धैवत पर तथा अवरोह में रिषभ पर न्यास करते हैं| आजकल रागों को अधिक विस्तार से प्रस्तुत करने की प्रथा बन गई है| अत:सारे, रेमरे ,धसा ,धरे धमरे इस प्रकार रिषभ पर अधिक मात्रा में न्यास होने लगा है| इस स्थिति में रिषभ को वादी मानना और राग को पूर्वांग वादी मानना उचित लगता है| देशी संगीत में ऐसे बदलाव आना स्वाभाविक मानकर आगे बढ़ना ठीक होगा|

आरोह में सा रे म प ध म रे प ऐसा चलन रखकर गाया जाता है,अवरोह में सां ध म रे इस प्रकार से सीधे आते समय म में प का कण लेना चाहिए, अर्थात पम रे, ध सा ऐसे पंचम को गौण रखना चाहिए| ध म् रे प इस ढंग से भी गाते हैं, किन्तु सां ध प इस प्रकार से सीधे लेने से "गरुड ध्वनि "नामक [कर्नाटक संगीत के] राग का आभास उत्पन्न होता है| शुद्ध मल्हार नामक अप्रचलित राग है,जिसमे म् की प्रधानता रहती है| इसीसे दुर्गा में म् का महत्व अधिक नही रखा जाता| रात्रि के द्वितीय प्रहर में दुर्गा गाया जाता है| ताँ में एक स्वर का महत्व कम ही रहता है, अत:सरेमपधधपमरेमरेसा इसी प्रकार से तान ली जाती है| किन्तु प को प्रधानता नहीं देनी चाहिए, अर्थात प पर न्यास --धप, धसांधप, धसां रे सां धप इस प्रकार से हमेशा ठहरना गलत है| धपमप धपममरेसा इस तरह शीघ्र नीचे आते हुए प का महत्व कम कर देना चाहिए|

यहाँ पुन:एक बार कहना चाहूंगी कि प्रयोग प्रधान कलाओं में गुरु मुखी विद्या का महत्व सर्वोपरि रहता आया है और आगे भी रहेगा|

२ बिहाग --राग बिहाग में पुराने लोग तीव्र मध्यम बहुत कम मात्रा में लगते थे, संभवत: इसी कारण से इसे बिलावल थाट में समाविष्ट किया गया| आजकल आरोह में शुद्ध म एवं अवरोह में प म [तीव्र] ग म[शुद्ध] ग इस प्रकार से गाया जाता है| रिषभ और धैवत आरोह में वर्जित तथा अवरोह में दुर्बल रहते हैं| अत: राग की जाति औडव सम्पूर्ण मानी गई है| गंधार-निषाद वादी-संवादी हैं| यह राग कल्याण अंग का राग है| यह राग भी रात्रि के दूसरे प्रहर में गाया जाता है| नि सा म ग प ऐसा चलन रखा जाता है, यद्यपि आरोह नि सा ग म प नि सां ऐसा है, जैसा कि प्रयोग प्रधान कलाओं के बारे में कहा जाता है कि चलन अलग हो सकता है,या दोनों प्रकार से हो सकता है| तानों में नि सा ग म प नि सां नि ध प इसी प्रकार गाते हैं| रेनिसा,धमप इस प्रकार से आलापों में रे व ध को दुर्बल रखते हैं|

३ शंकरा--इस राग में मध्यम वर्जित है और आरोह में रिषभ नहीं लगता ,इसी से राग की जाति औडव-षाडव है| यह भी कल्याण अंग का राग है| इस का निकटवर्ती राग बिहाग है, किन्तु शंकरा में म का न होना और पनिध सां नि यह स्वर समूह बार बार लिया जाना इन दो बातों के कारण दोनों रागों में अंतर दीख पडता है| रिषभ को रेग रेसा इस प्रकार कण पूर्वक लिया जाता है| तन अंग की प्रधानता रहती है| सागपधपपगपगपगरेसा इस प्रकार से तान का चलन रखा जाता है|
ये बिलावल थाट के प्रमुख रात्रिगेय राग हैं|

English Translation

Greetings from Sudha Patwardhan to the readers of Sangeet Manthan !!!

Now, we will consider some main raagas which belong to Thaat Bilaawal and are sung at night. Those are Durgaa, Bihaag and Shankaraa.

1. **Durgaa** - Being all swaras Shuddha, Pt. Bhatakhandeji has classified some raagas under Thaat Bilawal. The above mentioned raagas fall under this category. In raag Durgaa, Gandhar and Nishad swars are varjit (absent), so jaati of the raag is 'Audav'. There are th 3 opinions about Vaadi and Sanvaadi - Some scholars consider Re as Vaadi and Dha as Sanvaadi, some consider Dha as Vaadi and Re-Sanvaadi whereas some are of the opinion as, Ma-Vaadi and Sa-Sanvaadi. One of the groups also consider Pancham as Vaadi and Shadaj as Sanvaadi. In a way, there is nyaas on Dha, so it can be appropriate to consider Dha as Vaadi, however, those who consider this raag as Poorvangvaadi raag, think appropriate to consider Rishabh as Vaadi, but traditionally, Durga is considered Uttaraangvaadi. Therefore, those who agree with that opinion, consider appropriate to have Dhaivat as Vaadi, but those who consider Ma or Pa as Vaadi is not in majority. Normally, nyaas is done on Dhaivat in aaroh and Rishabh in avaroh. Now-a-days raagas are performed in more detail. Therefore, nyaas is done on Rishabh more frequently like SR, RMR, DS DR DMR. In such case, considering Rishabh as Vaadi and

raag as Poorvangvaadi sounds appropriate. Such variations are considered very common (natural) in Indian music and so one should keep going with it.

In aaroh, raag is developed considering the chalan as SRMPDMRP. In avaroh, while singing simply like S'DMR, support of P (kan swar) is taken for M which means by singing PMRDS, P is considered non-prominent. DMRP is also one of the styles of singing, but simply singing S'DP gives the feel of the raag 'Garud Dhvani' which is famous raag of Carnatic music. There is a raag which is not very famous named 'Shuddha Malhaar' in which M is strong. Therefore, not much importance is given to M in raag Durga. Raag Durga is sung in the second part of night. In taan there is less importance given to one swar, so it is sung as SRMPDDPMRMRS. However, P should not be given priority so always doing nyaas on P as DP, DS'DP, DS' R S' DP is considered wrong. Importance of P is reduced by singing DPMP DPMMRS (coming down fast).

Here once again author wants to mention that in experimental art, the importance of knowledge (vidya) which comes from Guru's mouth (Gurumukhi vidya) is always unbeatable forever.

2. Bihaag - In ancient times, tivra M was sung very less frequently in raag Bihaag. Probably, for this reason, this raag is included in Thaat Bilaawal. Now-a-days, it is sung as Shuddha M in aaroh and P M(tivra) G M(Shuddha) G in avaroh. Rishabh and Dhaivat are varjit(absent) in aaroh and weak in avaroh. Therefore, jaati of the raag is considered as 'Audav-Sampoorna'. Gandhar and Nishaad are vaadi and sanvaadi respectively. This raag is of Kalyan ang. This raag is also sung in the second part of night. Chalan is N S G M P, however, aaroh is N S G M P N S' as it is already mentioned about experimental art that chalan can be different or can be by both ways. In tanas, it is sung as N S G M P N S' N D P. R and D are considered weak in alaaps by singing RNS, DMP.

3. Shankaraa - In this raag, Madhyam is varjit and Rishabh is not present in aaroh, so jaati is 'Audav-Shadav'. This raag is also of Kalyaan ang. Raag Bihaag is the closest raag of this raag, but not having M in Shankaraa and also singing PND S'N repeatedly (most frequently) in the same, differentiate both the raagaas. R is sung as support(kan) swar as RG RS. Taan ang is strong. The chalan of the taan is considered (sung) as SGPDPPGPGPGRS.

These are the main raagas which belong to thaat Bilaaval and are sung at night